अनुक्रमणिका

क्रमांक	विषय	जीवन मूल्य	पृष्ठ संख्या
1	थोड़ी धरती पाऊँ (कविता)	पर्यावरण - संरक्षण	3
❀	आः धरती कितना देती है। (कविता)		9
2	गुरुभक्ति (कहानी)	गुरू-सम्मान, कृतज्ञता	10
❀	अवमानना का परिणाम (कहानी)		17
3	हेर-फेर (कहानी)	संवेदनशीलता, समभाव	19
4	फूल और काँटा (कविता)	श्रेष्ठ कर्म, उत्तम व्यवहार	25
5	किफ़ायत (कहानी)	लगन, संघर्ष, जिज्ञासुभाव संयम	29
❀	असफलता का परिणाम		37
❀	वर्ग-पहेली 1		38
6	कल्पना चावला : प्रथम भारतीय महिला अंतरिक्ष यात्री (सत्यकथा)	वैज्ञानिक प्रगति, आत्मबल	39
7	बलिदान के पथ पर (एकांकी)	देशभक्ति, त्यागभावना, कर्मनिष्ठा	46
8	आत्माभिमान (कविता)	देशप्रेम, आत्म-सम्मान	53
❀	भरत (कविता)		58
9	सस्ते जहाज़ का सपना (हास्य नाटक)	कल्पनाशक्ति, आविष्काराक वृत्ति	69
❀	वर्ग-पहेली 2		68
❀	आदर्श प्रश्न-पत्र 1 (परीक्षण)		69
10	काश ऐसा न होता! (कहानी)	बालश्रम का विरोध	72
11	कोयल (कविता)	पक्षी-प्रेम, परिश्रम, कष्ट-सहिष्णुता	81
❀	धरती की गोद में (कहानी)		86
12	लुई ब्रेल (जीवनी)	आत्मविशवास, संघर्ष, आविष्कारक वृत्ति	87
❀	अपंगता बाधक नही		94
13	मंत्र (कहानी)	सद्व्यवहार, क्षमाशीलता	95
14	दोहा एकादश (दोहे)	गुरूभक्ति, सत्य, परहित, परिश्रम, दया	103
❀	वर्ग-पहेली 3		108
15	काला बादल (कहानी)	मित्रता, करूणा, प्रकृति-प्रेम	109
❀	रस-भरे बादल (कविता)		117
16	मेरी पहली रेल-यात्रा (संस्मरण)	सतर्कता, चतुराई, निर्भयबुद्धि	118
17	विशेष पुरस्कार (कहानी)	तर्किक बुद्धि, सेवाभाव, पशुप्रेम, मानवता	125
❀	सच्चा सेवक		136
18	कृष्ण की चेतावनी (कविता)	शान्ति व न्यायप्रियता, अहिंसा, धैर्य	137
❀	वर्ग-पहेली 4		143
❀	सत्यनिष्ठा (कहानी)		144
❀	आदर्श प्रश्न-पत्र 2 (परिक्षण)		145

पाठ–1

थोड़ी धरती पाऊँ

कविता

क्या आपके घर में या घर के आस-पास कोई बगीचा है? बगीचे में आप क्या-क्या देखते हैं? आज बगीचों व वृक्षों की संख्या पूर्व की अपेक्षा अत्यल्प हो गई है। इसके क्या कारण हो सकते हैं? वृक्ष केवल प्राकृतिक सौंदर्य में ही वृद्धि नहीं करते, अपितु प्राणियों के स्वस्थ जीवन के लिए भी परम आवश्यक हैं। अतः जहाँ भी स्थान मिले, वृक्ष लगाते रहना चाहिए। यदि आपके पास कुछ धरती हो, तो वहाँ आप क्या करना चाहेंगे? पर्यावरण की रक्षा करने के लिए आप क्या कर सकते हैं? कवि थोड़ी सी धरती पाकर क्या करना चाहता है – कविता को पढ़िए व जानिए।

बहुत दिनों से सोच रहा था,
थोड़ी धरती पाऊँ;
उस धरती में बाग-बगीचा,
जो हो सके लगाऊँ।

खिलें फूल-फल, चिड़ियाँ बोलें,
प्यारी खुशबू डोले;
ताज़ी हवा जलाशय में
अपना हर रंग भिगो ले।

लेकिन एक इंच धरती भी
कहीं नहीं मिल पाई;
एक पेड़ भी नहीं, कहे जो
मुझको अपना भाई।

हो सकता है पास तुम्हारे,
अपनी कुछ धरती हो;
फूल-फलों से लदे बगीचे
और अपनी धरती हो।

हो सकता है छोटी-सी
क्यारी हो, महक रही हो;
छोटी-सी खेती हो जो
फसलों में दहक रही हो।

शिक्षण-संकेत : उचित भाव व लय के साथ कविता-पाठ करवाएँ। कविता पाठ के मध्य भाषा व भाव संबंधी अनावश्यक प्रश्न न करें। छात्रों को पर्यावरण सुरक्षा का महत्व समझाते हुए वृक्षारोपण के लिए प्रेरित करें।

केवल पढ़ने के लिए

रस-भरे बादल

कविता

गगन में शान से घिरते, घुमड़ते साँवरे बादल।
बहकते फिर रहे कैसे, गगन में बावरे बादल।।

अभी कुछ देर पहले पूर्व के —
आकाश से उठकर।
धरा को ढक लिया इसने,
उमड़कर फैलकर झुककर।

थिरकती बिजलियाँ नाची, हवा की बज उठी पायल।
कभी झुकते, कभी रुकते, बहकते रस-भरे बादल।।

अँधेरा बढ़ चला सहसा,
कि दिन में रात हो आई।
बही शीतल हवा सन-सन,
फुहारें साथ में लाई।

ज़रा-सी देर में ही बह चले नाले-नदी कलकल।
कभी झुकते, कभी रुकते, बहकते रस-भरे बादल।।

—कमल सत्यार्थी